International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 7, 512-514
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

मनोज कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–बी.एड.
एस.आर.एस. महाविद्यालय
नरैनी–बॉदा, उ0प्र0

Correspondence:
मनोज कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–बी.एड.
एस.आर.एस. महाविद्यालय
नरैनी–बॉदा, उ0प्र0

''भारत में महिला सषक्तीकरण का मनोवैज्ञानिक परिचय''

मनोज कुमार

महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य महिलाओं को आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक दृष्टिकोण में सबल बनाने से है। नेहरू जी ने कहा है कि–''भारत की महिलाओं पर मुझे गर्व हैं, मुझे उनके सौन्दर्य, आभा, आकर्षण, लज्जा, शालीनता, बुद्धिमत्ता और त्याग की भावना पर नाज है। मैं सोंचता हूँ कि भारत की भावना का सही मायने में कोई प्रतिनिधित्व कर सकता है तो वह भारत की महिलाएँ ही हो सकती हैं, पुरुष नहीं।''

समाज की मुख्य धारा की शुरूआत महिलाओं की भूमिका से होती हैं आज वर्तमान में विश्व की महिलाएँ विभिन्न स्तरों पर साधन विहीन है किन्तु मुख्य रूप से महत्वपूर्ण पदों पर इक्कीसवीं शताब्दी को ही वास्तव में महिलाओं के शैक्षिक विकास एवं सशक्तीकरण की प्रक्रिया का उन्नयन काल माना जा सकता हैं। सार्वभौमीकरण के प्रभाव के कारण आज महिलाएँ प्रत्येक क्षेत्र में अवसर प्राप्त कर रही हैं किन्तु शहरों में ही दिशात्मक प्रयास अधिक है। जबकि कहा जाता है कि भारत देश की आत्मा गाँवों में निवास करती है जो अभी भी दयनीय स्थिति में डूबे हुए हैं।

किसी ने न सोचा होगा कि एक कड़कड़ाती ठण्ड की रात में जब गाँधी जी को अपना स्वयं का अधिकृत रेल टिकट रखते हुए भी 1893 में पीटर मार्टिजबर्ग पर उन्हें स्टेशन से अंग्रेजों ने नीचे उतार दिया था तो उनके मन और उनकी शारीरिक पीड़ा ने उन्हें आन्तरिक रूप से बदल दिया। इस घटना को नैदानिक मनोविज्ञान में upheaval (उथल–पुथल) अथवा तहलका मचाने वाली घटना माना जाता है। ऐसी घटना से आहत होकर व्यक्ति कुछ ऐसी क्रियाएँ करता है जिसके कारण उसके जीवन में कुछ सकारात्मक बदलाव आते हैं। इसमें किसी मनोविज्ञान विशेषज्ञ की आवश्यकता नहीं होती है। सीता, अनुसुइया, रजिया सुल्तान, चाँदबीबी, रानी दुर्गावती, महारानी लक्ष्मीबाई, अवन्तीबाई आदि भारत की विरांगनाएँ इसके प्रमुख जीवन्त उदाहरण हैं। इनके सार्थक प्रयास महिलाओं के जीवन स्तर के उन्नयन के लिए एक प्रमुख उदाहरण है।

गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धान्त :–

व्यक्ति में विभिन्न प्रकार की बुद्धि पायी जाती है जिसके आधार पर वह अपना जीवन मार्ग तय करता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक गार्डनर ने (Book : Frame of mind, "The theory of multiple intelligence" 1983) में बहुबुद्धि का सिद्धान्त प्रस्तुत किया और बताया कि बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार से व्यक्ति में पृथक–पृथक कौशल विकसित होते हैं। अनेकों विद्वानों की मान्यता है कि कारण, तर्क तथा ज्ञान सभी में एक समान पाये जाते हैं किन्तु व्यवहार में परिवर्तन करके उनमें बदलाव किया जा सकता है। गार्डनर हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे उन्होंने जीरो प्रोजेक्ट प्रारम्भ किया था और अनेक अध्ययन करके यह ज्ञात किया था कि किन तरीकों के माध्यम से लोग बुद्धिमान होते हैं। गार्डनर के सिद्धान्त से यह जाना जा सकता है कि प्रत्येक बालक–बालिका में किस प्रकार की प्रतिभा पायी जाती है उन्होंने शुरूआत में सात प्रकार की बुद्धि को बताया किन्तु 1998 में आठवीं तथा 1999 में बुद्धि के नौ प्रकारों की व्याख्या की, जो निम्न प्रकार से हैं (महिला परिपेक्ष्य के आधार पर) –

1– शाब्दिक बुद्धि – भाषायी (Verbal/Linguistic) :–

इस प्रकार की बुद्धि में कुछ व्यक्ति अधिक विकसित श्रवण कौशल व भाषा क्रियाओं को करने वाले होते हैं। वह शब्दों में अधिक चिन्तन करते हैं। इनमें व्याख्याता, लेखक, गीतकार, वक्ता तथा वकील आदि आते हैं। कुछ प्रमुख महिलाएँ–

लेखिका – महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, तसलीमा नसरीन, महाश्वेता देवी आदि।
गीतकार – प्रभा ठाकुर, इन्दु जैन, रानी मलिक।
पत्रकार – शोभा डे, वर्तिका नन्दा, गीता दत्त, इरा झॉ।
वकील – सुषमा स्वराज, शीला मुर्थी, कमलेश जैन

2– गणितीय बुद्धि – तार्किक (Logical/Mathematical) :–

इस बुद्धि में कुछ व्यक्ति प्रत्यात्मक चिन्तन करते हैं वे प्रतिमानों, श्रेणियों व सम्बन्धों को खोजना व अपने चारों ओर के विश्व के बारे में लगातार प्रश्न पूंछना पसन्द करते हैं। उन्हें तर्क प्रधान खेल व पहेली भी

अधिक पसन्द होते है। वे मानसिक गणितीय समस्याओं को आसानी से सुलझा लेते हैं। इसमें गणितज्ञ, दार्शनिक तथा भौतिक शास्त्री (वैज्ञानिक) आदि होते हैं। कुछ प्रमुख महिलाएँ–

गणितज्ञ – लीलावती (भास्करा पुत्री), शकुन्तला देवी, नैंसी कोपेल आदि।

वैज्ञानिक – कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स (NRI), टेसी थामस, मीनाक्षी नारायण (God particle group)

दार्शनिक – गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, एनीबेसेण्ट।

3– दृश्य बुद्धि – स्थानगत (Visual/Spatial) :–

इस बुद्धि के अन्तर्गत कुछ व्यक्तियों में शब्दों के बजाय तीन आयामी चित्रों के आधार पर चिन्तन का गुण पाया जाता है। उनमें किसी आब्जेक्ट (प्रतिबिम्ब) को देखने, याद रखने व पुनः संरचित करने की योग्यता होती है। ऐसे व्यक्तियों को डिजाइन बनाना, निर्माण करना व खोजना पसन्द होता है। इनकी कल्पना शक्ति प्रबल होती है। इसमें पेण्टर, वास्तुकार, पाइलट, सर्वेक्षणकर्ता, एस्ट्रोनाट्स, अभियन्ता, मूर्तिकार, नेवीगेटर्स, शतरंज खिलाड़ी आदि आते हैं। प्रमुख महिलाएँ –

पेण्टर – अमृता शेर गिल, रीमा बंसल, भारती खेर, भारती दयाल।

मूर्तिकार – मृणालिनी मुखर्जी, हेमा उपाध्याय, मीरा मुखर्जी, नलिनी मालिनी।

शतरंज – कोनेरू हम्पी, तान्या सचदेव आदि।

नेवीगेट्र्स – अम्बिका हुड्डा, सीमा रानी शर्मा।

4– सांगीतिक बुद्धि – लयात्मक (Musical/Rhythmic) :–

इस बुद्धि के अन्तर्गत कुछ व्यक्तियों में ध्वनि प्रतिमानों, आरोह–अवरोह, लयबद्धता का प्रबल बोध पाया जाता है। संगीत में इनकी अधिक रूचि पायी जाती है। संगीत में इन प्रतिमानों को सुनने व समझने की उच्च योग्यता होती है। एक बार श्रवण कर ही वह गीत याद कर लेते हैं। वे सांगीतिक प्रतिमानों को स्वयं से पुनः सृजित करते हैं। इसमें म्यूजिसियन (संगीतकार) तथा कम्पोजर (संगीत लेखिका) आदि आते हैं। प्रमुख महिलाएँ–

म्यूजिसियन – स्नेहा खानवेलकर

कम्पोजर – सरस्वती देवी

संगीत गायन में – लता मंगेशकर, आशा भोसले, सुनिधि चौहान आदि।

5– शारीरिक बुद्धि – गतिबोधक (Bodily/Kinesthetic) :–

इस प्रकार से युक्त बुद्धि के व्यक्तियों में शारीरिक क्रियाओं का बोध अत्यधिक होता है तथा वे अधिक जटिल शारीरिक गतियों को प्रस्तुत करते हैं। उनमें गामक व खेलकूद की दक्षता अधिक पायी जाती है। ये वस्तुओं व उपकरणों को प्रयोग करने में अधिक दक्ष होते हैं। इनमें खिलाड़ी, नर्तक आदि शामिल होते हैं। प्रमुख महिलाएँ –

खिलाड़ी – पी.टी. उषा (एथलेटिक्स), अन्जू बाबी जार्ज (लम्बी कूद), एम.सी. मैरी काम (मुक्केबाजी), सानिया मिर्जा (टेनिस), शाइना नेहवाल (बैडमिण्टन), मिताली राज (क्रिकेट), कर्णम मल्लेश्वरी (भारोत्तोलन)

नर्तकी – हेमा मालिनी, मृणालिनी साराभाई, मल्लिका साराभाई, डोना गांगुली।

6– अन्तः वैयक्तिक बुद्धि (Intrapersonal) :–

इस बुद्धि वाले व्यक्ति फुर्तीले व शांत स्वभाव के होते हैं। वे अपनी यांत्रिक भावनाओं, स्वप्नों व विचारों के प्रति अधिक सोचते व विचार करते हैं और अपने ज्ञान का प्रयोग अपने जीवन को सुनियोजित एवं निर्देशित करने हेतु करते हैं। उनमें अपने व दूसरों के लिए न्याय की चाहत होती है – इनमें योगी व सन्त आते हैं। प्रमुख महिलाएं –

योगी – डा0 प्रभा अत्रे, सिद्धराजिनी, राधे माँ

संत – मीराबाई, माता अमृतानन्दमई, आनन्द मई गुरू माँ

7– अन्तर वैयक्तिक बुद्धि (Interpersonal) :–

इस बुद्धि से युक्त व्यक्ति दूसरे के बारे में पूर्ण रूप से परिचित होते हैं। वह समूह में सम्प्रेषण व अन्य लोगों से व्यक्तिगत सम्बन्धों में कुशल व्यवहार करते हैं। वह लोगों के साथ सकारात्मक व्यवहार करने में सफल रहते हैं। इनमें दूसरों की भावनाओं को अच्छे से पहचानने की योग्यता पायी जाती है। ऐसे व्यक्तियों में शिक्षक, धार्मिक नेता, राजनेता, साइकोथेरापिस्ट आदि आते हैं। प्रमुख महिलाएं –

धार्मिक महिला नेता – साध्वी उमा भारती, साध्वी निरंजन ज्योति, गौरी माँ, ऋतम्भरा देवी, शारदा देवी आदि।

महिला राजनेता – इन्दिरा गाँधी, सुषमा स्वराज, सोनिया गाँधी, मायावती, जय ललिता, स्मृति ईरानी आदि।

8– प्राकृतिक बुद्धि (Naturalistic) :–

ऐसे बुद्धि वाले व्यक्ति वातावरण के बारे में अधिक रूचि व प्रेम रखते हैं। वे प्राकृतिक सौन्दर्य से अधिक स्नेह रखते हैं। उन्हें प्रकृति के लक्षण सीखना, जन्तु–पादप की क्रियाओं व व्यवहार को पहचानना अच्छा लगता है। इस वर्ग में किसान, पर्यावरणविद्, जीवविज्ञानी, वनस्पति शास्त्री आदि आते हैं। इसमें महिलाओं के अन्तर्गत मेनका गाँधी व मेधा पाटेकर प्रमुख हैं।

9– अस्तित्ववादी बुद्धि (Existentialist) :–

इस प्रकार के बुद्धि वाले व्यक्तियों के पास ऐसी योग्यता होती है जिससे वह सदैव उच्च स्तर पर चिन्तन करते हैं। यह सदैव जीवन तथा मृत्यु एवं मानव के अस्तित्व पर प्रश्न डालते हैं इसके अन्तर्गत दार्शनिक व समाजसेवी आते हैं। प्रमुख महिलायें – मदर टेरेसा, वन्दना शिवा, उमा टण्डन, अरूणा गुप्ता आदि।

शोध सारांश

प्रत्येक समाज को बदलने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका मनोवैज्ञानिक रूप से शिक्षा और शिक्षण–प्रशिक्षण के कार्यशैली में परिवर्तन है। क्योंकि परिवार के पश्चात् विद्यालय ही बच्चों में संस्कार प्रदान करते है। मैं यह मानता हूं कि हमारी शिक्षण प्रणाली और सामाजिक सोंच दोनों में बदलाव की अधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आज वर्तमान में भी अनेक विषमता देखी जा रही है। जिसमें लड़कों को उनके मन वांछित कार्य करने दिये जाते हैं और उन पर अधिक धन व्यय किया जाता है। जबकि लड़कियों के लिए शिक्षा की उत्सुकता कम पायी जाती है। गार्डनर का नौ बहुबुद्धियों वाला सिद्धान्त महिला सशक्तीकरण एवं उनके उन्नयन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। क्योंकि प्रत्येक स्त्री व पुरुष में पृथक–पृथक बुद्धि की विशेषताएं पायी जाती हैं। इसके सिद्धान्त के प्रत्येक पक्ष का लिंगानुपात के माध्यम से स्पष्ट अध्ययन किया जा सकता है। चिन्तक, नीति निर्माता एवं संवैधानिक ऊँचें पदों पर कार्य करने वाले लोग तथा एन.जी.ओ. से जुड़े व्यक्ति विभिन्न प्रकार व पक्षों को ध्यान में रखकर निम्नतम स्तर पर महिलाओं की सहभागिता का अध्ययन एवं अनुप्रयोग करके महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक नया अध्याय व आयाम जोड़ सकते हैं। क्योंकि महिलाओं ने समाज को ऊँचे पायदान पर पहुंचाने का सकारात्मक प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Mangal, S.K. (2011), Advanced Educational Psychology, PHI Learning Lvt. Ltd. New Delhi, P-289-291.
2. Sachchidanand and Mandal B.B. (2009), Empowerment of Women, Promise and Performance, Shri Brajkishor Memorial Institute, Patna.
3. Ciccarelli, Saundra, K & Meyer, Glenne (2008), Psychology, Dorling Kindersley (India) Pvt. Ltd. Delhi P-333-339.

4. Kaur, Kanwaljit (2008), Education: A means of Empowring Women, Miracle of teaching, Asian Academy of Education & Cultural, Bhopal.
5. Prasad Janardan & Kaushik Vijay Kumari (2007), Women Education & Development A New Perspective, Kanishka Publisher, New Delhi.
6. लवानिया, एम.एम. (2012), भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर।
7. मिश्र, करुणा शंकर (2010), शिक्षा मनोविज्ञान के नये क्षितिज–अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबद पृ0 63–64.
8. डॉ0 श्रुतिआनन्द एवं राय, सुशील कुमार (2013) : महिला सशक्तीकरण के शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, संस्कृति संचय, इलाहाबाद.
9. www.google.co.in